Faizanbhai.blogspot.com

www.youtube.com/deenkidawat

प्रस्तावना

आज प्रायः यह समझा जाता है कि सभी धर्मो अर्थात् यहूदियत ईसाईयत और इस्लामकी परंम्परायें ओर शिक्षाएं परस्पर मिलती जुलती हैं। परन्तु असामी धर्मो जैसे सनातन धर्म से वे सर्वथा भिन्न हैं। इस दुखद गलतफहमी का कारण यह है, कि समाज में ऊपरी मित्रता और सौहार्द रखने वाले विभिन्न धर्म अनुयायी भी न केवल एक दूसरे के धर्म परंपराओं से अनभिज्ञ हैं बल्कि स्वयं अपने तथा कथित धर्मो के बारे में भी कुछ रीति रिवाजों और दन्तकथाओं के सिवा कुछ नहीं जानते।

हम सब जानते हैं कि यह समग्र ब्रह्माण्ड की रचना के पीछे कोई (गोड) परम शक्ति बुद्धि कार्य कर रही है। जिसे हम अल्लाह या परब्रह्म या गोड के नाम से जानते है। समग्र ब्रह्मांड में एक संवादिता-हारमोनी नजर आती है। उसी परम शक्ति-अल्लाह-परब्रह्म के जो सनातन शाश्वत नियम हैं उसीसे समग्र ब्रह्मांड संचालित हो रहा है। हमें भी अपने जीवनमें संवादिता-हारमोनी लानी हो और यह विश्व समाज को एक विश्व कुटुंब बनाना हो तो उसी एक परम शक्ति अल्लाह-परब्रह्म-गोड के जो सनातन शाश्वत नियम, जो हमारे मूल धर्म ग्रंथो में हैं। उन्ही का निष्काम भाव न केवल अध्यन करना होगा बल्कि हमारे विचार, वाणी ओर व्यव्हारमे भी लाना होगा।

इस्लाम का यह दावा है कि वह सनातन धर्म (अरबी भाषा में दीने-ए-कय्यिम) है। इस्लामी परंपरा के अनुसार प्रथम ईश-दूत ह आदम (स्वयंभू मनु) भारत में उतारे गए। जाहिर है कि ईश धर्म ग्रंथ की शृंखला का पहला संस्करण भी इसी देशम आया जहा से ईश दूतो (पैगम्बरो) की श्रुखला का प्रारंभ हुआ। इश्वरीय ग्रन्थो की श्रुखला का अन्तिम संस्करण कुरआन यह बताता है कि :

निःसन्देह यही (कुरआन) आदि ग्रंथो (वेदो) में (भी) है। (26:196)

विश्व के इन दो महान धर्म / सनातन और इस्लामका तुलनात्मक अध्ययन कुरआन के इस दावे को अक्षरशः सिद्ध करता नजर आता है। प्रस्तुत पुस्तिका में ईश वाणी के दो पवित्र संस्करणों, वेद और कुरआन की समानताओं की एक झलक दर्शाई गई है। आशा है, धार्मिक उन्माद के इस समय में यह प्रयास **शान्ति पैगाम** को एक नई ज्योति जलाएगा। हमें विश्वास है कि अज्ञात पूर्व मानवजाति को मिलने वाली वेदवाणी और उसके एक लम्बे अन्तराल के बाद अवतरित होने वाले कुरआन में ये अद्‌भूत समानताएं किसी भी सुलझे हुए मास्तिष्क को यह सोचने पर मजबूर कर देगी कि इन दोनो वाणियो का मुख्य सोत एकही - एक अल्लाह-परब्रह्म !

शुभेच्छु : स्वर्गीय आचार्य विष्णुदेव पंडित
आचार्य डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
एस. अब्दुल्लाह तारीक

वेद	कुरआन
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति जो उस ब्रहम को नहीं जानता वह वेद से क्या करेगा। (ऋग. 1:164:39)	*युज़िल्लु बिही कसीरंव-व यह्दी बीहिकसीरन् - व मा युज़िल्लु बिही इल्लल् - फ़ासिक़िन* वह अल्लाह इसी (कुरआन) द्वारा अनेकों को पथभ्रष्ट पाता है और इसी से वह अनेकों का मार्गदर्शन करता है और इससे पथभ्रष्ट वह केवल उन्हीं को पाता है जो अवज्ञाकारी हाते हैं। (2:36)
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः मैं तुम सबको समान मन्त्र से अभिमन्त्रित करता हूँ। (ऋग. 10:191:3)	*कुल या यहलल् किताबि तआलौ इला कलिमतिन् सवा-इम्-बयनना व बयनकुम्* तुम कहो कि हे पूर्व ग्रन्थ वालो ! हमारे और तुम्हारे बीच जो समान मन्त्र हैं, उसकी और आओ (3:64)
वयं देवानां सुमतौ स्याम हम सत पुरुषों की शुभ मति में रहें। (अ. 6:47:2)	*व अदख़िल्नी बिरह्मति-क फी अ़िबादिकस्-सालिहीन* प्रभोवर ! अपनी कृपा से मुझे अपने सतपुरुषो में दाखिल कर। (27:19)
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्। मैं उस महानतम पुरुष को जानता हूं	*या अय्युन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव-व मुबश्शिरंव्-व नजीरा व दाअ़ियन् इलल्लाही बिइ़ज्निही व सिराजम्-मुनीरा*

वेद	कुरआन
(जो) सूर्य रुप दीप्तिमान है, अंधकार को परास्त करने वाला है। या अहमद वेद (ब्रह्मज्ञान) है, महानतम पुरुष है सूर्यरुप दीप्तिमान, अंधकार को परास्त करने वाला है। (य. 31:18)	हे ईशदूत हमने तुम्हें गवाही देने वाला और शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला और अल्लाह के हुक्म से उसकी और बुलाने वाला दीप्तिमान सूर्यरुप बना कर भेजा है। (33:45:46) *व युखरिजुहुम् मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि बिइज्निहि* वह अल्लाह के हुक्म से उन्हें अन्धेरों से निकाल कर उजाले की और लाता है। (5:16)
द्विता विव्रे सनजा सनीडे अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः। *भगो न मेने परमे व्योमन्नधारयद् रोदसी सुदंसाः॥* ऋषियों द्वारा स्तुत्य परमेश्वर ने परस्पर जुड़े हुए प्राचीन आकाश और पृथ्वी को पृथक-पृथक किया। फिर उत्तम कर्म वाले ने सूर्य के समान उन दोनों को स्थित किया। (ऋग. 1:162:7)	*अ-व लम य-रल़जी-न क-फ़रु अन्नस्-समावाति वलअर्-ज कानता रत्-कन् फ़-फ़तक्नाहुमा* क्या इन्कार करने वालों नें नहीं देख लिया कि यह आकाश और धरती पहले परस्पर जुड़े हुए थे फिर हमने उन्हें पृथक-पृथक किया। (21:30)
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्। प्रजापति के प्राण रुप देवताओंने पुरुष को मानसिक यज्ञ के अनुष्ठान	*व इज कुल्ना लिल्-मलाइकतिस्सजुद् लि आद-म* याद रहे कि जब हमने फ़रिश्तों से (आत्मलोक में) कहा कि (प्रथम

वेद	कुरआन
काल में वरण किया । (ऋग. 10:90:15)	पुरुष) आदम के आगे झुक जाओ (2:34)
बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रंयत्प्रैरत नामधयं दधाना: बृहस्पतिने सबसे पहले पदार्थो का नामकरण किया, वह जो प्रेरणा करते हैं वह समस्त वाणियों का अग्र है । (ऋग. 10:71:1)	*व अल-ल-म आदमल् -अस्मो अ कुल्लहा* और परमेश्वर ने (सबसे पहले आत्मा लोक में पहले मनुष्य) आदम को सभी नामों का ज्ञान दिया । (2:31)
अन्वार भेथामनुसरं भथामेतं लोकं श्रद्दधाना: सचन्ते । श्रद्धा वाले लोग परलोक का ध्यान रखते हुए सत्कर्मो को निरन्तर मिलकर करते रहें । (अ. 6:122:3)	*अ-रज़ीतुम् बिल्-हयादिद्दुन्या मिनल् आख़िरति फ़-मा मताअुल्-ह यातिद् दुन्या फ़िल्आखिरति इल्ला क़लील* क्या तुम इस लोक के जीवन ही पर राज़ी हो गए हो ? इस लोक की सामग्री परलोक की अपेक्षा बहुत थोड़ी है । (9:38)
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुद: प्रमुद आसते । *कामस्य यत्राप्ता: कामास्तत्र माममृतं कुधी... ॥* आनन्द और स्नेह जहां वर्तमान रहते हैं, जहां सभी कामनाएं इच्छा होते ही पूर्ण हो ज़ाती हैं उसी अमर लोक में मुझे निवास दो ।(ऋग. 9:113:11)	*वफ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व त-लज्जुल्-अअ-युनि व अन्तुम् फ़ीहा खालिदून* स्वर्ग में हर वह चीज़ होगी आत्माएं जिसी चाहें और आंखें जिससे लज्ज़त पाएं । और तुम उसमें सदैव रहोगे । (43:71)

वेद	कुरआन
इन्द्र क्रतुं न आ भर हे परमेश्वर तू हमें तत्वदर्शिता से भर दे। (अ. 18:3:67)	*युअतिल्-हिक्म-त मंय्यशा-उ* वह ईश्वर जिसे चाहता है तत्वदर्शिता प्रदान करता है। (2:269)
मही देवस्य सवितः परिष्टुतिः इस संसार के बनाने वाले के लिए स्तुति है। (ऋग. 5:81:1)	*अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आ़लमीन अर्रहमानिर्रहीम* स्तुतियों का पात्र अल्लाह ही है जो सब संसारों का प्रभु है। (1:1)
वसुर्दयामान जो देने वाला और दयावान है। (ऋग. 3:34:1)	*इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तअीन* जो असीम कृपावान और दयावान है। (1:2)
नय सुपथा राये अस्मान हमको हमारे कल्याण के लिए सद्मार्ग पर ले चल। (य. 40:16)	*इह्दिनस्-सिरात्ल्मुस्क़ीम* हे परमेश्वर हमारा सीधे रास्ते की ओर मार्ग दर्शन कर। (1:5)
महो दिवः पृथिव्याश्च सम्राट वह परमेश्वर महान आकाश लोकों व पृथ्वी का सम्राट है। *नः भवत्विद्रं ऊती* वह ईश्वर हमारी सहायता करें। (ऋग. 1:100:1)	*अ-लम् तअ्-लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा लकुम् मिन् दुनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिव-व ला नसीर* क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और पृथ्वी का साम्राज्य अल्लाह ही के लिए है। और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई मित्र और सहायक नहीं है। (2:107)

वेद	कुरआन
अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी । समस्त सृष्टि पर सामर्थ्य रखने वाले स्वामी ने दिन और रात का भेद स्थापित किया । (ऋग. 10:190:2)	*अ-लम्-र अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लय-लफ़िन्नहारि व यूलिजुन्हा-रफ़िल्लयलि व सखूखरश्शम्-स वल्क्-म-र कुल्लुंय्यजरी इला अ-जलिम्-मुसम्मंव्* क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और उस ने सूर्य और चन्द्रमा का वश में कर रखा है। प्रत्येक एक निर्धारित अवधि तक चलेगा । (31:29)
यदंग दाशुशेत्वमग्ने भद्रं करिष्यसि त्वेत तत् सत्यमंगिरः हे परमेश्वर आप सदाचारी को अच्छा फल देते हैं यह आपकी सद्प्रवृत्ति है। (ऋग. 1:1:6)	*निअ्-म-तम्-मिन् अिन्दिना कजालि-क नज्जी मन् श-कर* यह हमारी ओर से एक वरदान है कि हम कृतज्ञ को ऐसा ही अच्छा बदला देते हैं । (54:35)
ऋतस्य पथा नमसा विवासेत मनुष्य सत्य के मार्ग पर विनम्रता पूर्वक चले । (ऋग. 10:31:2)	*इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न मुख्तालन् फ़खूरा* अल्लाह एसों को मित्र नहीं रखता जो घमन्डी और अहंकारी हैं । (4:36)
यो विश्वामि वि पश्यति भवना संच पश्यति । वह ईश्वर सारे जगत को भली प्रकार जानता है । (ऋग. 10:187:4)	*वल्लाहु यअ्-लमु मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि वल्लाहु बिकुल्लि शयइम्न् अलीम* और अल्लाह आसमानों और धरती में जो कुछ है उसे जानता है, अल्लाह हर वस्तु का ज्ञान रखता है । (49:16)

वेद	कुरआन
यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतंकम । *द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजातद् वेद वरुणस्तृतीयः ॥* जो खड़ा होता है, चलता है, जो धोखा देता है, जो छिपता फिरता है, जो दूसरे को कष्ट पहुंचाता है, जो दो मनुष्य खुफिया बात करते है, तीसरा ईश्वर इन सबको जानता है । (अ. 4:16:2)	*यअ-लमु सिर्रकुम् व जह-रकुम् व यअ--लमु मा तक्सिबून* वह तुम्हारी छुपी और खुली और जो कुछ भी तुम (अपने कर्मो द्वारा) कमाते हो उन सब बातों को जानता है । (6:3)
विश्वस्य मिषतो वशी यह सब प्राणियों को वश में रखता है । (ऋग. 10:190:2)	*व हुवल्काहिरु फ़ौ - क़ अिबादिही* वह अपने बन्दों पर छाया हुआ है । (6:18)
प्रजा पतिर्जनयति प्रजा इमाः परमेश्वर इन सब सृष्टियों को उत्पन्न करता है । (अ. 7:19:1)	*व ख़-ल-क़ कुल्-ल शयइन्* उसने ही हर वस्तु को पैदा किया (25:2)
यह एक इद् विदयतेवसु मर्ताय दाशुषे जो (परमेश्वर) एक है (वह) ही दानशील मनुष्य को बहुत प्रकार जीविका देता है । (ऋग. 1:84:7)	*व अन्फिकू खयरल्-लिअन्फुसिकुम्* निर्धनों पर खर्च करो इसमे तुम्हारा अपना कल्याण है । (64:16) *इन् तुक़्रिजुल्ला-ह कर्-जन् ह-स-नंय्युज़ाअिफ़हु लकुम् व यग्फिर् लकुम्* यदि अल्लाह को तुम अच्छी प्रकार

वेद	कुरआन
	कर्ज़ दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जाएगा । (64:17)
न तस्य प्रतिमा अस्ति उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है । (य. 32:3)	*लय-स कमिस्लिही शयउन्* कोई वस्तु असके समरुप नहीं है । (42:11)
यस्यैमाः प्रदिशः यह सब दिशाएं उसकी हैं । (ऋग. 10:121:4)	*व लिल्लाहिल्-मश्रिकु वल्मग्रिबु* पूरब भी अल्लाह ही का है और पश्चिम भी । (2:115)
सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्ताते सविता धरात्तात संसार का सृष्टा, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे सब जगह है । (ऋग. 10:34:14) *विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो* परमेश्वर के नेत्र हर और हैं, उसका मुख हर तरफ़ है । (ऋग. 10:81:3)	*फ अयनमा तुवल्लू फ़-सम्-म वज्हुल्लाहि इन्नल्ला-ह वासिअुन् अलीम* सो तुम जिधर भी मुँह करो उदर ही अल्लाह का रुख़ है, नि:संन्देह अल्लाह बड़ा सर्व विस्तृत और जानने वाला है । (2:115)

वेद	कुरआन
अद्धा देव महा ईश्वर निश्चय ही महान है। (अ. 20:58:3)	*कबीरुल्-मु-अत-आल* परमेश्वर सबसे बड़ा और आलीशान है। (13:9)
अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि ईश्वर के विधान नहीं बदलते (ऋग. 1:24:10)	*ला तब्दी-ल लिकलिमातिल्लाहि* अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ करता। (10:64)
न किरस्य प्रमिनन्ति व्रतानि ईश्वर के नियम कोई नहीं बदल सकता। (अ. 18:1:5)	*व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला* और तुम ईश्वर के विधान में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे। (48:23)
इसे चित् तव मन्यवे वे पेते भियसा मही यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वां अवधोरर्चन्ननु स्वराज्यम ॥ हे परमेश्वर ये लोक तेरे प्रताप से कांपते है। तू अपनी प्रताड़ना से दुष्कर्मी को मारता है और सत्कर्मी के लिए अपने राज्य में सत्कार करता हुआ सुख प्रदान करता है। (ऋग. 1:80:11)	*व लिल्लाहि माफ़िस्समावाति व माफ़िल्अर्जिलि-यज्जि-यल्लजी-न असाउ बिमा अमिलू व यज्ज़ि-यल्लजी-न अह-सनू बिल्हुस्ना* और आसमानों और जमीन में जो कुछ भी है अल्लाह ही की सम्पत्ति है ताकि जिन्होंने बुरे कर्म किए उन्हें बुरा बदला दे और सदाचारियों को अच्छा बदला दे। (53:31)

वेद	कुरआन
सर्व तद् राजा वरुणो किचष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात जो आकाश और पृथ्वी के बीच है या जो कुछ उससे परे है उसे ईश्वर देखता है। (अ. 4:16:5)	*यअ्-लमु मा यलिजु फ़िलअर्जि व मा यख़रुजु मिन्हा व मा यन्जिलु मिनस्समाइ व मा यअ-रुजु फ़ीहा* वह हर उस चीज़ को जानता है जो धरती में दाख़िल होती है और जो उसमें से निकलती है और उसे भी जो आसमान से उतरती है और जो वापस उसमें चढ़ती हैं। (57:4)
वेद वातस्य वर्त्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहत: । वेक्ष ये अध्यासते ॥ यह सब ओर फैले हुए वायु के गुणवान रास्तों को जानता है ओर उन सब चीजों को जानता है जो उस (वायु) पर आश्रित हैं। (ऋग. 1:25:9)	*व हुवल्लजीं अर्स-लरिया-ह बुश्रम्-बय-न यदय रह्मातिही* और वही है जो अपनी करुणा से पहले शुभ सूचना के रुप में हवाओं को भेजता है। (25:48)
होतारं सत्ययजं रोदस्योरुत्तान हस्तो नमसा विवासेत । पूजनीय, आकाश व पृथ्वी को सत्य के मार्ग से चलाने वाले परमेश्वर से विनम्रता पूर्वक हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना करो। (ऋग. 6:16:46)	*उद्अू रब्बुकुम् त-ज़ुर्अं व्-व ख़ुफ़्य-तन् इन्नहू ला युहिब्बुल-मुअ-तदीन* तुम अपने पालनहार से विनम्रता पूर्वक चुपके, चुपके प्रार्थना किया करो। निस्सन्देह वह सीमाओं के उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता। (7:55)

वेद	कुरआन
नू नव्यसे नीवयसे सूक्ताय साधया पथः । प्रत्नवद रोचया रुचः ॥ तू दिन-प्रतिदिन नए और उससे भी नूतनतर सुभाषित के लिए रास्ता बना और उस रास्ते को ऐसा प्रकाश का बना जैसे तुझसे पहले ऋषि बनाते आए हैं। (ऋग. 9:9:8)	*व लाकिन् तस्दीक़ल्लजी बय-ना यदयहि व तफ्सील्-किताबि ला रय-ब फ़ीही मिर्रब्बिल्-आलमीन* ....बल्कि यह कुरआन तो जो कुछ इससे पहले आ चुका उसका पुष्टिकर्ता है और (पिछले) ईश्वरीय ग्रन्थों का विस्तार है। इसमें कोई संदेह नहीं... सारे संसार के रब की और से है। (10:37)
पतिर्बभूथासमो जनानामेको विश्यवस्य भवनस्य राजा । यह मनुष्यों का स्वामी है जिसके समान कोई नहीं, सब लोकों का एकमात्र शासक है। (ऋग. 6:36:4)	*जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ला इला-ह इल्ला हु-व* वही अल्लाह तुम सब का स्वामी है, संपूर्ण राज्य उसी का है, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं। (37:6)
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः । वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है, उस एक ब्रह्म को विद्वान अनेक नामों से पुकारते हैं। (ऋग. 1:164:46)	*कुलिद्अुल्ला-ह अविद्अुर् रह्मा-न अय्यम्-मा तद्अू फ़-लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना* कह दो कि तुम अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर पुकारो। उसे जो भी कह कर पुकारो, उसके सभी अच्छे नाम हैं। (17:110)

वेद	कुरआन
तस्य ते भक्तिवांसः स्याम हे प्रभो ! हम तेरे ही भक्त हों । (अ. 6:79:3)	*इय्या-क नअबुदु वइय्या-क नस्तअीन* हे रब ! हम तेरी ही बन्दिगी करते हैं और तझ से ही मदद मांगते हैं । (1:4)
तमेव विद्वान् नबिभाया मृत्योः उस आत्मा ही को जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता । (अ. 10:8:44)	*कुल् इन् कानत् लकुमुद्दारुल्-आखिरत् अिन्दल्लाहि खालि-स-तम्-मिन्दूनिन्नमि फ त-मन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तम् सादिकीन* कहोः अल्लाह के यहां यदि सचमुच परलोक का घर, सारे लोगों को छोड़ कर केवल तुम्हारे ही लिए है तो मृत्यु की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो । (2:94)
सं श्रुतेन गमेमहि हम ब्रह्मज्ञान से युक्त हों । (अ. 1:1:4)	*व कुल् रब्बि जिदनी अिल्मा* कहो हे रब मेरे ज्ञानमें वृद्धि कर । (20:114)
जनं मनुजातं सब मनु की संतान हैं । (ऋग. 1:45:1)	*या अय्युहन्नासु इन्ना ख़-लक़नाकुम् मिन् ज-करिव-व उन्सा* हमने तुम सब को एक पुरुष और स्त्री से पैदा किया । (49:13)

वेद	कुरआन
सुगा ऋतस्य पन्थाः सत्य का मार्ग सहल है । (ऋग. 8:31:13)	*मा अन्ज़ल्ला अलैकल-कुर्आ-न लितश्का-* हमने तुम्हें कठिनाई में डालने के लिए नुकशान तुम्हारी ओर नहीं उतारा । (20:2)
ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नहीं कर पाते । (ऋग. 9:73:6)	*व इंय्यरौ सबीलुर्रुश्दि ला यत्तखिजूहु सबीलन्* यदि वे (दुष्कर्मी) सद्मार्ग देख भी लें तो भी वे उसे मार्ग नहीं बनाएंगे। (7:146)
न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः बिना परिश्रम किए देवों की मैत्री नहीं मिलती । (ऋग. 4:33:11)	*अम् हसिब्तुम् अन् तद्खुलुल-जन्न-त व लम्मा यअ् लमिल्लाहुल्लजी-न जाहदू मिन्कुम व यअ-ल-मस्साबिरीन* क्या तुमने यह समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश करोगे जबकि अल्लाह ने अभी उन्हें तुम में से विभावित ही नहीं किया जिन्होंने परिश्रम किया और जो धर्यम्वान हैं । (3:142)
शंनः कुरु प्रजाभ्यः प्रभु ! हमारी संतान का कल्याण करो । (य. 36:22)	*व अस्लिह ली फी जुर्रिय्यती* हे प्रभु ! मेरे लिए मेरी सन्तान में भलाई रख दे । (46:15)

वेद	कुरआन
त्वंनो अन्तम उत त्राता तू हमसे अत्यन्त समीप और रक्षक है। (ऋग. 5:24:1)	*व नह्नु अक्-रबु इलयहि मिन् हब्बिल्-वरीद* और हम तो उस (इन्सान) की श्वास नली से भी अधिक उसके निकट है। (50:16)
न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः । *नोत स्ववृष्टिं अस्य युध्यत एको अन्यच् चकृषे विश्वमानुषक ॥* न पृथ्वी और आकाश उस परमेश्वर की व्यापकता की सीमा को पा सकते हैं और न अन्य ग्रह, और न आकाश से बरसने वाली वर्षा। उस एक के सिवाय कोई दूसरा इस जगत पर सामर्थ्य नहीं रखता। (ऋग. 1:52:14)	*वलायुहीतू-नबिशैइम्मिन् अिल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज* और वे लोग उसके ज्ञान के किसी भाग का व्यापक आभास नहीं कर सकते सिवाय उतने के जो वह स्वयं चाहे। उसका सामार्थ्य आकाशों और पृथ्वी पर विस्तृत हैं। (2:225) *व युनज्ज़िलुल्-ग़य-स* और वही वर्षा उतारता है। (31:134)
वेद नाव समुद्रियः वह समुद्र की नौकाओं को जानता है। (ऋग. 1:25:7)	*अ-लम् तं-र अन्नल्फुल-क तज्री फ़िल्बहिर बिनिअ-मतिल्लाहि* क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के वरदान से नौका समुद्र में चलती है। (31:31)

वेद	कुरआन
अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर। मा ते काशप्लकौ दृशन स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ॥ (जब) स्त्री हां पुरुष बन गई हो (अर्थात जब पुरुष के समान घर से निकले तो) नीचे देख, उपर नहीं। दोनों पावों को समेट कर चल कि तेरे निम्नांग नजर न आएं। (ऋग. 8:33:19)	*वक़ुल्लिल्-मुअमिनाति यग्-जुजु-न मिन् अब्सारिहिन-न व यह-फ़्झन फुरुजहुन-न वला युब्दी-न ज़ी-न-तहुन-न* ईमान वाली स्त्रियों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी लज्जा इन्द्रियों की रक्षा करें और अपना श्रृंगार न दिखाएं सिवाय उसके जितना ज़ाहिर हो ही जाता है और अपने सीनों पर अपनी ओढनियों के आंचल डाले रहें। (24:31)
असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः। ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥ जो मनुष्य जीते हुए अपनी आत्मा का हनन करते हैं वे मरने के पीछे अंधकारमय असुरों के लोक को जाते हैं। (य. 40:3)	*वला तफ्तुलू अन्फुसकुम्* अपने प्राणों को हलाकत में न डालो। (4:29)
यो मारयति प्राणयति यस्मात प्राणन्ति भुवानानि विश्वा। जो (परमेश्वर) मारता है और प्राण प्रदान करता है और जिस (की कृपा) से सभी जीव जीवित रहते हैं। (अ. 13:3:3)	*अल्लाहुल्लजीख़्-ल-क़कुम् सुम्-मर-ज-क कुम सुम-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम्* अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर उसने तुम्हें रोजी दी, फिर तुम्हे मौत देता है, फिर तुम्हें जीवित करेगा। (30:40)

वेद	कुरआन
दृष्ट्वा रुपे व्याकरोत्सत्या नृते प्रजापतिः । *अश्रद्धा मनृतो अदधाच्छद्धाँ सत्ये प्रजापतिः ।* परमेश्वर ने सत्य और मिथ्या के रुप को अपनी ज्ञान दृष्टि से अलग अलग कर दिया और आदेश दिया कि सत्य में आस्था लाओ और मिथ्या को ठुकरा दो । (य. 19:77)	*कत्तबय्यनुर्रुश्दु मिल्गय्यि मंय्यकफुर बित्तागूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-कदिस्तम्-स-क बिल्-अुर्वविल्-वुस्का* सद्मार्ग, को गुमराही से अलग स्पष्ट कर दिया गया तो अब जो कोई दानव को ठुकरादे और अल्लाह पर आस्था लेआए उसने बड़ा प्रबल सहारा थाम लिया । (2:256)
उत त्वः पश्यन्त ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रुणोत्ये नाम । बुद्धि हीन लोग ग्रन्थ देखते हुए नहीं देखते और सुंनते हुए नहीं सनते । (ऋग. 10:71:4)	*वलहुम् अअ्-युनुल-ला-युब्सिरु-न बिहा व लहुम्आजानुल्-ला-यस्माअू-नबिहा-उलाइ-क कॅल्अन्आमि बल हुम अजल्लु* और उनके पास आंखे है वे उनसे देखते नहीं और उनके पास कान है वे उनसें सुनतें नहीं, वे पशुओंकी तरह हैं । (7:179)
महेचन त्वामद्रिवः पराशुल्काय देयाम । न सहस्त्राय नायुताय बज्रि वो न शताय शतामध ॥ हे सदाशक्तिमान परमेश्वर तू इतना मूल्यवान है कि में तुझको किसी शुल्क के लिए भी नहीं छोड़	*व ला तश्तरु बि आयाती स-म-नन् कलीलंव्* और थोडे मूल्य पर मेरी "आयतों" को न बेचो और मेरा डर रखो । (2:41)

वेद	कुरआन
सकता । न हजारों के लिए न अरबों के लिए और न सैंकड़ो सांसारिक भोगों के लिए। (ऋग. 8:1:5)	
स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व तू ही कर्म कर और तू ही उसका फल भोग। (य. 3:15)	*अल्ला तंजिरु वाजिरतु वविज्-र उखरा* और यह कि कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। (53:38)
ऋत्वः समहदीनता प्रतीपं जगमा शुचे मृला सुक्षत्र मृलय ॥ हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर हम अपनी अज्ञानता से पथभ्रष्ठ होते हैं। हम पर कृपा करें। (ऋग. 7:89:3)	*इन्नल्ला-ह ला यज्लिमु न्ना-स यशअंव्-व ला किन्नन्ना-स अन्फुसहुम् यज्लिमून* निःसंदेह अल्लाह मनुष्यों पर कुछ जुल्म नहीं करता किन्तु लोग स्वयं अपने आप पर जुल्म करते हैं। (10:44)
केवलागो भवति केवलादी जो अपनी कमाई अकेला खाता है वह पाप खाता है। (ऋग. 10:117:6)	*लन्तनालुल्बिर्-र हत्ता तुन्फिकू मिम्मा तुहिब्बून* तुम नेकी के दरजे को नहीं पहुंच सकते जब तक कि अपनी उन चीजों में से न ख़र्च करो जो तुम्हें प्रिय हैं। (3:92)
सइद् भोगो यो गृहवे ददात्यन्न कामाय चरते कृशाय । अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम ॥	*वज्ज़रा-इ वल्का अिमीनल्-गय-ज वल्आफ़ि-न अनित्रासि वल्लाहु युहिब्बुल-मुहिसनीन*

वेद	कुरआन
जो निर्धनों और अभाव से पीड़ितों की सहायता के लिए दान करता है उसका भला होता है, उसके शत्रु भी उसके मित्र बन जाते हैं। (ऋग. 10:117:3)	यह वे लोग हैं जो समृद्धि एवं निर्धनता प्रत्येक अवस्था में खर्च करते रहते हैं, और क्रोध को रोकने वाले हैं, और लोगों को क्षमा करने वाले हैं, और अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है। (3:134)
य आधाय चकमानाय पित्वो अन्नवान्त्सन् सफितायो पजरग्भुषे। स्थिरंमनः कृष्णुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितारं न विन्दते॥ जो दुर्बल, अन्न के चाहने वाले, दरिद्रता से पीड़ित को, अन्न होते हुए भी सहायता नहीं देता उसको कष्ट आने पर कोई सुख नहीं मिलता। (ऋग. 10:117:2)	*फ़-जालिकल्लजी यदुअ-अुल-यतीम व ला यहुज्जु अला तआमिल्-मिस्कीन फवयलुल-लिल्मुसल्लीन* वही तो है जो अनाथ को धक्के देता है और निराश्रित को काना खिलाने पर नहीं उकसाता। सो तबाही है ऐसे नमाजियों के लिए। (107:2,3,4)

चेतावनी

इस पुस्तिका में दो ईश्वरीय ग्रंथो के उद्धरांश प्रस्तुत किये गये हैं। इसे आदरपूर्वक सम्मान से रखना आपका कर्तव्य है। निरादरपूर्ण तरीके से इधर उधर फेंकना ईश्वरीय प्रकोप एवं बेबरकती का कारण भी बन सकता है।

वेद	कुरआन
यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । जो हमारा पालक एवं उत्पन्न करने वाला है जो विधाता है वही जगत के सब स्थानों और लोकों को जानता है । (ऋ. 10:82:3)	*अम्मय्यब्दउल्-खलक-सुम-म युओदुहू व मय्यरज़ुक़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि* कौन है वह जो सृष्टि का प्रारंभ करता है और फिर उसे लौटाता है । और कौन तुम को आकाश व पृथ्वी से जीवीका देता है ? (कुरआन 27:64) *कुल ला यअ-लमु मन् फिस्समावाति वल्अर्ज़िल्गयब इल्लल्लाहु ।* इनसे कहो कि अल्लाह के सिवाय आकाशों व पृथ्वी में कोई ढकी छिपी बातों का ज्ञान नहीं रखता । (कुरआन 27:65)
सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णा दस्कम्भने सविता द्यामदृहत् । परमेश्वर ने अपने यंत्रो से पृथ्वी को नियन्त्रित किया और सहारे के बिना आकाश को अधर में स्थापित किया । (ऋग. 10:149:1)	*ख-ल-कस्समावाति बिगयरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्का फिल् अजि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम* उसने आकाशोंको पैदा किया बिना ऐसे स्तंभो के जिन्हे तुम देख सको और पृथ्वी में पर्वत स्थापित कर दिए ताकि वह तुम सहित असन्तुलित न हो जाए... (कुरआन 31:10)

वेद	कुरआन
श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यंदिनं परि। *श्रद्धां सूर्यस्य जिम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥* श्रद्धा का हम प्रातः काल में श्रद्धा का दिन के मध्य में, और सूर्य के अस्त होने पर आह्वान करते है। है श्रद्धे हमें लोक में श्रद्धा युक्त करे। (ऋग. 10:151:5)	*व सब्बिह बिहम्दि रब्बि-क कब्-ल तुलूअिश-शम्सि व कब्-ल गुरुबिहा व मिन् आनाइल्लयलि फ-सब्बिह व अत-राफन्नहारि ल-अल्लक-क तर्जा। व-ला तमुद्-दन्-न ऐनय-क इला मा मत्तअ-ना बिही अज्वाजम् मिन्हुम् जह्-र-तल्-हयातिददुन्या । लिनफतिनहुम् फीहि।* सूर्योदय एवं सूर्यास्त से पूर्व अपने प्रभु की प्रशंसा व स्तुति करो और रात में तथा दोपहर में दोनों सिरों पर स्तुति करो, कदाचित तुम समपन्न होगे । और आँख उठाकर उन सांसारिक ऐश्वर्योंकी और न देखो जो हमने इनमें से कुछ लोगों की इसलिए दे रखे हें ताकि हम इस में उनकी परीक्षा लें। (कुरआन 20:130, 131)
यत् कि चेदं वरुण दैव्ये जने अभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि । *अचित्ति यत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥* हे परमेश्वर हम मनुष्य जो कुछ भी	*रब्बाना ला तुआखिज्ना इन्नसीना अव अख्तअ्ना* हे हमारे प्रभु हम से भूल चूक हो जाए या हम से गलती हो जाए तो आप (ऐसी त्रुटियों पर) हमारी पकड़

वेद	कुरआन
अपराध आप (परमेश्वर) का करते हैं और और अनजाने में जो हम धर्म के विरुद्ध करते हैं उन पापों के कारण हम को दण्ड न दीजिए। (ऋग. 7:89:5)	मत कीजिए। (कुरआन 2:286)
न भोजा मम्रुनं न्यर्थमीयुर्न रष्यिन्ति न व्यथन्ते ह भोजाः। *इदं यिद्वश्वं भुवनं स्वश्चैतत्सवं दक्षिणैभ्यो ददाति।* दानशील लोग अमर हो जाते हैं, वे न तो बर्बाद होतें हैं और न दुःख, क्लेश, भय से पीड़ित होते हैं। दान इन दाताओं को इस विश्व एवं स्वर्ग लोक (की सुविधाएं) प्रदान करता है। (ऋग. 10:197:8)	*अल्लजी-न युन्फिकू-न अम्वालहुम् बिल्लयलि वन्नहारि सिर्रवं-व अलानि-यतन् फ लहुम् अजूरुहुम् अिन-द रब्बिहिम् व ला खवफुन् अलयहिम् व ला हुम् यहजनून* जो लोग अपना धन रात-दिन खुल कर या छिपे तौर पर दान में खर्च करते हैं उनका बदला उनके प्रभु के जिम्मे है और उनके लिए (इस लोक व परलोग में) न कोई भय होगा और न कोई शोक। (कुरआन 2:274)
माधमन्त्रं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य। *नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाधो भवति केवलादी।* मूर्ख बिना परिश्रम अन्न (धन आदि) कमाता है। सत्य कहता हूं कि वह	*यम्हकुल्लाहुर्रिबा व युर्बिरस-द-काति वल्लाहु ला युहिब्बु कुल-ल कफ्फारिन् असीम* अल्लाह ब्याज को विनाशकारी (बे बर्कत) बनाता है और दान में बर्कत देता हैं और अल्लाह किसी अकृतज्ञ

वेद	कुरआन
उसका विनाश ही है। न तो वह सन्तों को खिलाता है और न मित्र को। अकेला खानेवाला केवल पाप का भक्षण करता है। (ऋग. 10:117:6)	पाप के भोगी का पसन्द नहीं करता। (कुरआन 2:276)
यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः । *यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ।* हिम से ढके पर्वत जिसकी महिमा कहते हैं, नदियों सहित समुद्र जिसकी महिमा कहते हैं, समस्त दिशाएं जिसकी भुजाएं (समान) हैं (उसके अतिरिक्त) हम किस देव की भक्ति पूर्वक उपासना करें। (ऋग. 10:121:4)	*अम्मन् ज-अ-लल् अर-ज करांरव-व ज-अ-ल खिलालहा अन्हारंव-व-ज-अ-ल लहा खासि-य व ज-अ-ल बयनल्-बहरयनि हाजिजन् अ इलाहुम-म अल्लाहि बल् अक्सरुहुम ला यअ-लमून* वह कौन हे जिसने धरती को (मानवका) ठिकाना बनाया और उस में नदियाँ बहाई। और उसमें पर्वत के खूंटे गाडे और दो समुद्रों बीच (अदृश्य) आवरण बनाए ? क्या एक अल्लाह के साथ कोई अन्य पूज्य भी (इन कर्मो में उसका साझी) है ? किन्तु फिरभी अधिकतर लोग अज्ञानी (बने हुए) हैं। (कुरआन 27:61)

वेद	कुरआन
यो देवष्वधि देव एक आसीत् । जो समस्त देवों का एक देव है । (ऋग. 10:121:8)	*उल्लाहकल्लजी-न यद्अू-न यब्तगून इला रब्बिंहिमुल-वसी-ल त ।* जिन (देवों) का यह लोग आह्वान करते हें वे तो स्वयं अपने प्रभु की ओर माध्यम् की तलाश में हैं । (कुरआन 17:57)
नाब्रह्मा यज्ञ ऋृधग्जोषति त्वे । ब्रह्म तत्व से हीन यज्ञ तुझे (हे परमेश्वर) तनिक भी नहीं भाता है । (ऋग. 10:105:8)	*फयलुल्-लिल्मुसल्लीन अल्लीन-न हुम् अन् सलातिहिम् साहून अल्लजी-न हुम् युराऊ-न* बड़ी फिटकार है उन नमाजियों पर जो अपनी नमाजों की और से भूल में पडे हैं । वे जो (नमाज़ के नाम पर) मात्र दिखालावा करते हैं । (कुरआन 107:4,5,6)
पवमान ऋतं बृहच्छु ज्योतिरजीजनत् । पावक विधान ने अति उज्जवल ज्योति को जन्म दिया और काले अंधकार को नष्ट किया । (ऋग. 9:66:24)	*किताबुन् अन्जल्नाहु इलय-क लितुख्रिजन्ना-स मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि* एक ग्रन्थ है, जिसे हमने तुम्हारी और अवतरित किया है ताकि तुम लोगों को अंधियारों से निकाल कर प्रकाश में ले जाए । (कुरआन 14:1)

वेद	कुरआन
इन्द्रं मित्रं वरुमग्निमाहु रथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् । *एकं सद्विपा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥* वह (ईश्वर ही) इन्द्र, मित्र, वरुण एवं आकाश में गरुत्मान है (वही) अग्नि, यम और मातरिश्वा है । विद्वान जन एक ब्रह्म को (ही) अनेक नामों से पुकारते हैं । (ऋग्वेद 1:164:46)	*अल्मलिकुल्-कुद्दुसुरसलामुल-मुअमिनुल्-मुह्यमिनुल्-अजीजुल-जब्बारुल-मु-त-क ब्बिरु सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून हुवल्लाहुल-खालिकुल-बारिउल्-मुसव्विरु लहुल अस्माउल-हुस्ना* वह मालिक, कुद्दूस, सलाम, मोमिन, मुहैमिन, अजीज, जब्बार और मुतकब्बिर है, पवित्र है अल्लाह उनसे जिन को यह लोग उसके साझी ठहरा रहे है । वही अल्लाह खालिक बारी और मुसव्विर है । यह सब उसी एक के अच्छे अच्छे नाम है । (कुरआन 59:23,24)
तस्य ते भक्तिवासः स्यामः (हे परमेश्वर) हम तेरे ही भक्त हों । (अ. 6:79:3)	*इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नस्तअीन* (हे परमेश्वर) हम तेरी ही बंदिगी करते हैं और तुझीसे मदद मांगते हैं । (कुरआन 1:4)
भुवनस्य यस्पतिरेक एव नस्मयो विक्ष्वीड्यः । सब ब्रह्माण्डका वह एक ही स्वामी	*रब्बुस्समावाति वल्अर्जि व मा बयनहुमा फअ्-बुद्हु वस्तबिर् लिअिबादतिही हल् तअ्-लमु लहू समिय्या*

वेद	कुरआन
सभी प्रजाओं द्वारा सिर झुकाने व उपासना करने योग्य है। (अ. 2:2:1)	वह आकाशों का व पृथ्वी व इन के बीच जो कुछ है, सब का प्रभु है, तुम उसी की बन्दिगी करो और उसी की बंदिगी पर जमे रहो, क्या तुम्हारे ज्ञान में उसका कोई तुल्य हैं ? (कुरआन 19:65)
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोक गतासुमेतमुप शेष एहि। *हस्त ग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूय।* हे (बिधवा) नारी जीवित समाज की ओर उठकर चल। इस मृतक के सहारे तू पड़ी है। आ अब अपना हाथ ग्रस्थ करने वाले वीर्यदाता (नए) पति की संतान को यथावत प्राप्त हो। (अ. 18:3:2)	*फ इजा ब-लग्-न अ-ज-लहुन्-न फ-ला जुना-ह अलयकुम् फीमा फ-अल-न फी अन्फुसिहिन्-न बिल्मअरुफि* फिर जब उन विध्वाओं की इद्दत (शोक अवधि) पूरी हो जाए तो जो कुछ स्वयं अनपे मामले मे भले तरीके से वें करें (अर्थात् पुनर्विवाह करें) तुम पर कोई दोष नहीं। (कुरआन 2:234)
इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा। *शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि॥* (परमेश्वर) इस मार्ग में हमें शिक्षा दे। हम जीते हुए प्रकाश को पायें। (अ. 18:3:67)	*युअतिल्-हिकम-त मंय्यशा-उ व मंय्युअतल्-हिक्म्-त फ-कद ऊति-य खयरन् कसीरन् व मा यज्जक्करु इल्ला उल्लुल-अल्बाब* वह अल्लाह जिसको चाहता है विवेक प्रदान करता है और जिसे विवेक प्रदान करता है और जिसे विवेक

वेद	कुरआन
	प्राप्त हो गया उसका बडा कल्याण हो गया । किन्तु इन बातों से केवल वही सीख लेते हैं जो बुद्धिजीवी हैं । (कुरआन 2:269)
ब्रह्मा भूमिर्विहिता ब्रह्म द्यौरुत्तरा हिता । ब्रह्मे दमूर्ध्वं तिर्यक् चान्तरिक्ष व्यचो हितम् ॥	*वल-इन्-स-अल्तहुम् मन् ख-ल-कस्समावाति वल-अर्-ज व सख्ख-रश्शम्-स वलक-म-र ल-यकूलुन्नल्लाहु फ-अन्ना युअ-फकून*
ब्रह्म द्वारा ही इस पृथ्वी की रचना की गई और ब्रह्म द्वारा ही द्यौ लोक ऊंचा धारा गया और ब्रह्म ही ने ऊपर सब ओर विस्तृत अंतरिक्ष को रचना की है । (अ. 10:2:25)	यदि तुम उन (न मानने वालों) से प्रश्न करो कि पृथ्वी एवं अंतरिक्ष को किसने उत्पन्न किया और सूर्य और चन्द्रमा को किसने नियंत्रित किया है तो वे भी अवश्य यही कहेंगे कि अल्लाहने फिर ये किधर धोका खा रहे हैं ? (कुरआन 29:61)
सहृदय सांमनस्यनविद्वेषं कृणोमि वः । अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥	*व-ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यिअतु इद्फअ-बिल्लती हि-य अहसनु फ-इजल्लजी बय-न-क व बयनहू अदावतून क-अन्नहु वलिय्युन हमीम*
मैं तुम्हारे लिए हार्दिक एकता, एकमनता और द्वेष रहित भाव	भलाई और बुराई एक समान नहीं है

वेद	कुरआन
(निर्धारित) करता हुं, परस्पर प्रेम रखो जैसे गौ अपने बछड़े से (प्रेम करती है)। (अ. 3:30:1)	। तुम बुराई का जवाब उत्तम भलाई से दो इस प्रकार तुम्हारे तथा दूसरे के बीच यदि दुश्मनी भी थी तो वह तुम्हारा धनिष्ठ मित्र हो जाएगा। (कुरआन 41:34)
अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः । पुत्र पिता का अनुगत हो और माता के साथ एक मन वाला हो। (अ. 3:30:2)	*बिल्-वालिदयनि इहसानन् इम्मा यब्लुगन्-न अिन्दकल्-कि-ब-र अ-हदुहुमा अव किलाहुमा फला तकुल्लहुमा उफ्फिव-व ला तन्हरहुमा व कुल्लहुमा कवलन् करीमा* माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों वृद्धवस्था में रहे तो उन्हें उफ तक न कहो और उन्हें झिड़कर जवाब न दो बल्कि उनसे आदर पूर्वक बात करो। (कुरआन 17:23)
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् । पत्नि पति से मीठी मधुर वाणी बोलने वाली हो। (अ. 3:30:2)	*व मिन् आयातिहि अन् ख-ल्-लकुम मिन् अन्फुसिकुम अज्-वाजला-लतस्कुन् इलयहा व ज-अ-ल बयनकुम म-वद्-द-तंव व रह-म-तन्* उस परमेश्वर की निशानियों में से एक

वेद	कुरआन
	यह है कि तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोडे बनाए ताकि तुम उनके पास सुकून प्राप्त करो और तुम्हारे बीच परस्पर प्रेम व करुणा उत्पन्न कर दी। (कुरआन 30:21)
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। *सम्यग्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।* भाई, भाई से और बहन, बहन से द्वेष न करें। एक मन और गति वाले होकर मंगलमय बात करें। (अ. 3:30:3)	*या अय्युहल्लीन आमनू ला यस्खर् कवमुम्-मिन्-कवमिन् असा अंय्यकून् खयरम्-मिन्हुम् व ला निसाउम्-मिन् निसाइन् असा अंय्यकुन्-खयरम् मिन्हून-न व ला तल्मिजू अन्फुस कुम व ला तनाबजू बिल्-अल्काबि बिअ-स-लिस्मुल-फुसूकु बअ-दल-ईमानि व मल्लन् यतुब फ-उलाइ-कं हुमुज्जालिमून* हे ईमान वालो कोई जाति अन्य जाति का मजाक न उडाये हो सकता है कि वे उन (मजाक उडाने वालों) से बेहतर हों। और न स्त्रियां अन्य स्त्रियों का मजाक उडाए कदाचित वे उन मजाक उडाने वाली स्त्रियों से बेहतर हों। परस्पर एक दूसरे को तीखे शब्द न कहो और न एक दूसरे को बूरी उपाधि दें। आस्था के बाद इन घोर पाप कर्मो में नाम कमाना

वेद	कुरआन
	बहुत बुरा है और जो बाज न आएं व अन्यायी हैं । (कुरआन 49:11)
ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः । *अन्यौ अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनस्कृणोमि ॥*	*व कूलू लिन्नासि हुसनं-व* और लोगो से मधुर वाणी बोलो (कुरआन 2:83)
तुम बड़ो का मान रखने वाले, उत्तम चित्त वाले, मित्रता पूर्वक एक जुट होकर चलते हुए छिन्न भिन्न न हो, परस्पर सुन्दर वचन कहते हुए आओ। मैं तुम्हें एक मन व गति वाले करता हुं ।	*वअतसिमू बि हब्लिल्लाहि जमीअंव-व ला तफर्ररकू* सब एक जुट हो कर अल्लाह की रस्सी को पकड लो और परस्पर टुकडे, टुकडे मत हो जाओ । (कुरआन 3:103)
अवशसा निःशसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः । जो पाप विश्वासघात, धृणा या अपवाद से और जो पाप जागते या साते हुए हमने किए हैं । हे परमेश्वर उन सभी अप्रिय दुष्कर्मो को हम से दूर कर दे । (अ. 6:45:2)	*रब्बना फागफिरलना जुनूबना व कफ्फिर अन्ना सय्यिआतिना व तवफफना म-अल्-अब्रार* हे हमारे प्रभु जो पाप हमसे हुए हैं उन्हें क्षमा करदे, जो दोष हमे में है उन्हें दूर कर दे और हमें भले लोगों के साथ उठा । (कुरआन 3:193)

वेद	कुरआन
अग्निः प्रातः सवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद विश्वशंभुः । सब मनुष्यों के प्रिय, जगदुत्पादक, सबके कल्याण कारी परमेश्वर प्रातः काल की उपसाना में हमारी रक्षा करें। (अ. 6:47:1)	*व कुरआनल्-फजिर इन-न-कुरआनंल्-फजिर का-न मशहूदा* और फज्र (प्रातः काल) में कुरआन की पाबन्दी करो क्योंकि प्रातःकालीन कुरआन (विशेषकर) साक्ष्य होता है। (कुरआन 17:78)
तस्य वयं हेडिसि मापि भूम सुमृडीके अस्य सुमतो स्याम । हम उस (परमेश्वर) के क्रोध में कभी न होवें, उसकी करुणा और सुमति में बने रहें । (अ. 7:20:3)	*का-ल अजाबी उसीबु बिही मन् अशाउ व रहमती वसि-अत् कुल्-ल शयइन* प्रभु नें फरमाया दण्ड तो मैं जिसे चाहता हुं देता हुं किन्तु मेरी करुणा, हर वस्तु पर व्यापक है । (कुरआन 7:156)
अन्धंतमः प्र विशन्ति येअसंभूतिमुपासते । *ततो भूय अइव ते तमो य अ उ अम्भूत्यां रताः ॥* जो असंभूति (अर्थात प्रकृति रुप जड पदार्थ) की उपासना करते हैं वे घोर अंधकार (अन्धन्तम नामक नरक) में प्रविष्ट होते हैं । और जो सम्भूति (जड पदार्थ व प्रकृति से भिन्न सृष्टि) में	*कुलू अ-तअ-बूदू-न मिन् दुनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् जर्रंव-व ला नफअन् वल्लाहु हुवस्समीअुल-अलीम । कुल् या अहलल्-किताबि ला तग्लू फी दीनिकुम गयरल्-हक्कि व ला तत्तबिअू अहवा-अ कवमिन् कद् जल्लू मिन् कब्लु व अजल्लु कसींरव-व जल्लू अन् सवा-इस्सबील* इनसे कहो कि क्या तुम अल्लाह को

वेद	कुरआन
स्मरण करते हैं वे उससे बी अधिक अन्धकारमें पड़ते हैं। (यजु. 40:9)	छोड़कर उसकी उपासना करते हो जो न तुम्हारे नुकसान का अधिकार रखता है और न लाभ का जबकि सबकी सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला तो एक परमेश्वर ही है। कहो कि है पूर्व ग्रन्थ वालो, अपने धर्म में असत्य अतिश्योक्ति न करो और उनका अनुसरण न करो जो तुमसे पूर्व स्वयं पथभ्रष्ठ हुए और बहुतों को पथभ्रष्ट किया और (सदमार्ग) से भटक गया। (कुरआन 5:76, 77)
य एक इ त्तमुष्टु हि कृष्टिनां विचर्षणिः। जो मनुष्यों को देखने वाला एक ही हे उसी की स्तुति करो। (ऋ. 6:45:16)	*हु-वल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हुव आलिमुल गयबि वश्शहादति* वह अल्लाह (एक परमेश्वर) ही है जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, अदृश्य व प्रत्यक्ष सब वस्तुओं को जानने वाला। (कुरआन 59:22)
मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्य। हे मित्रो परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना न करो तो तुम्हारी	*अल्ला तअ-बुद् इल्लल्ला-ह इन्नी अखाफु अलयकुम् अजा-ब यवमिन् अलीम* तुम एक अल्लाह के सिवाय किसी

वेद	कुरआन
हिंसा न होगी। (ऋ. 8:1:1)	अन्य की बन्दगी न करो अन्यथा मुझे डर हे कि तुम पर एक दिन पीडा जनक प्रकोप आयेगा। (कुरआन 11:26)
स एक एक एकवृदेक एव। वह आप एक अकेला वर्तमान, एक ही है। (अ. 13:4:12)	*कुल हुवल्लाहु अ-हद अल्लाहुरस-मद* कहो कि वह अल्लाह एक है, उसे किसी के साथ की आवश्यकता नहीं। (कुरआन 112:1:2)
अवनो वृजिना शिशी हि (हे परमेश्वर) आप हमारे पापों को (हमसे) दूर किजिए। (ऋ. 10:105:8)	*रब्बना फग्फिर्लना जुनूबना व कफ्फिर अन्ना सय्यिआतिना।* हे हमारे प्रभु हमारे पापों पर हमें क्षमा कर और हमारी बुराईयों को हमसे दूर कर दे। (कुरआन 3:193)
तस्याम् सर्वा वक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह चंद्रमा सहित यह सब नक्षत्र उसी के वश में हैं। (अ. 13:4:28)	*व श्शम्स वल क-म-र वन्नुज्-म मुसख्खरातिम्-बिअम्रिही* उसीने पैदा किए सूर्य, चांद और तारे, (ये) सब उसके आदेश के अधीन हैं। (कुरआन 7:54)

शान्ति पैग़ाम

(वेद और क़ुरआन के दिव्य प्रकाश में)

संकलन कर्ता :

स्वर्गीय आचार्य विष्णुदेव पंडित

आचार्य डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र

सैयद अब्दुल्लाह तारिक़

प्रकाशन वर्ष : 2006

संयोजक

अहमदाबाद :

डॉ. एम. शरीफ़
डॉ. रफ़ीयुद्दीन किनारीवाला
श्री ईकबाल लाकडावाला
एडवोकेट अ.रशीद कुरेशी
श्री सलीम होकाबाज़
श्री इद्रीस मन्सूरी
श्री लियाक़त मनियार
श्री अ. रज़ाक शेख
श्री आलम भाई
प्रो. धनराज पन्डित
श्री कौशिक जानी
श्री वरदराज पन्डित
श्री गोविन्द पन्डित
श्री हरीश पन्डित
डॉ. प्रवीण ओझा
श्री आर. आर. परमार
प्रो. राजेन्द्र कुमार पन्डा
प्रो. जाफ़र हुसैन आई. लालीवाला

उदयपुर (राज.) :

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र (जयपुर)
श्री मन्सूर इंजीनियर
डॉ. अब्बाल अल्वी
डॉ. मदनलाल चौधरी
श्री ज़ाकिर हिलावाला
श्री अ. रशीद काझी
श्रीमती रेहाना शेख

संपर्क सूत्र उदयपुर (राज.) :

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र (प्री. जयपुर)
श्री मन्सूर इंजीनियर
फ़ोन : (0294) 2523844
2411322, 2422069

प्रकाशक :
रौशनी पब्लिशिंग हाउस, बाज़ार नसरुल्लाह खां, रामपुर (उ.प्र.)
फोन : (0595) 2324500, 2327476 मोबाइल : 9412251500
सौजन्य : शान्ति पैग़ाम समिति, मुबीन होस्पिटल, शालीमार कोम्पलेक्स, पालडी अहमदाबाद-7
फ़ोन : (079) 26578697, 26608422, 26607103, 22130421

Design & Printed by : Wonders India Enterprises (M) 9811200621

Faizanbhai.blogspot.com

www.youtube.com/deenkidawat